भारत में सामाजिक-आर्थिक विकास एवं नियोजन

Socio-economic Development and Planning in India

डॉ. अनिल कुमार सिन्हा
डॉ. अजीत कुमार यादव

भारत में सामाजिक–आर्थिक विकास एवं नियोजन

डॉ. अनिल कुमार सिन्हा
डॉ. अजीत कुमार यादव

गंगा प्रकाशन

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित -प्रसारित नहीं किया जा सकता।

भारत में सामाजिक-आर्थिक विकास एवं नियोजन

© लेखक

संस्करण : 2023

ISBN 978-93-5514-096-8

₹ 1000

गंगा प्रकाशन

ब्रांच ऑफिस : एल-9ए, गली नं. 42,
सादतपुर एक्सटेंशन, दिल्ली - 110094
हेड ऑफिस : मकान नं. 43, बल्दिहॉ, सैदाबाद,
प्रयागराज, उ.प्र. - 221508
मोबाइल : 8750728055, 8368613868
ई-मेल : prakashanganga@gmail.com

प्रिन्टर्स :
आर्यन ऑफसेट प्रिन्टर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

	प्राक्कथन	*v*
1	कृषि-विकास के समसामयिक उभरते मुद्दे : भारतीय किसान की व्यथा *—डॉ. श्रीकमल शर्मा*	1
2	हरित क्रांति का सामाजिक-आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव *—डॉ. अनिल कुमार सिन्हा*	42
3	भारत में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका *—डॉ. अजीत कुमार यादव*	58
4	सरगुजा क्षेत्र, छत्तीसगढ़ में औद्योगिक विकास शक्कर उद्योग के विशेष संदर्भ में *—डॉ. सीमा मिश्रा*	95
5	ग्रामीण विकास: छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष संदर्भ में *—मनीष कुमार यादव*	104
6	जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में *—प्रेमचन्द यादव*	128
7	सामाजिक विकास की आधारशीला साक्षरता: छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष संदर्भ में *—दीपिका स्वर्णकार, डॉ. अनिल कुमार सिन्हा*	153

8 कार्यशील जनसंख्या का आर्थिक विकास पर प्रभाव छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिला के संदर्भ में
–ओमकार कुशवाहा 168

9 मानव जीवन की गुणवत्ता
–डॉ. बन्टेश कुमार मीणा 182

10 ग्रामीण विकास एवं नियोजन
–डॉ. रवि कुमार नागर 192

11 जल प्रबंधन एवं पर्यावरण संरक्षण
–अनिल कुमार व्यास 201

12 अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक व्यक्तित्व
–ललित मीणा, डॉ. एम.जेड. ए. खान 211

13 भारतीय समाज और पर्यावरण
–डॉ. मनीषा मिश्रा 223

14 बालाघाट जिले में सांस्कृतिक धरोहर एवं पर्यटन विरासत: एक भौगोलिक अध्ययन
–डॉ. मीनाक्षी मेरावी 236

15 सामाजिक विकास एवं नियोजन
–डॉ. बाबूलाल कुम्हारे 245

16 भौगोलिक पर्यटन एवं विकास
–डॉ. आर. बी. अग्रहरि 256

17 छत्तीसगढ़ में आधुनिक कृषि विकास का अध्ययन
––डॉ. अमरेन्द्र, निरंजन कुजूर 273

18 Agriculture Economics
– Dr. Sandeep Kumar Pandey 294

19 Socio-economic Development and Planning Experience of India and Chhattisgarh
– Dr. Arun Prakash 304

20 Analyzing the Disparities of Socio-economic Development at Block Level: A Case Study of Jashpur, Chhattisgarh 331
— *Dr. Sharmila Rudra, Ms. Sharmistha Rudra*

21 Socio Economic Condition and Problems of Tribal People in Raigarh District in Chhattisgarh 352
— *Dr. Kajal Moitra, Chandan Kumar Mandal*

8

कार्यशील जनसंख्या का आर्थिक विकास पर प्रभाव छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिला के संदर्भ में

ओमकार कुशवाहा
शोध छात्र (भूगोल)
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़

देश का आर्थिक विकास देश की अर्थव्यवस्था में विभन्न प्रकार के व्यवसायों को जन्म देता है और इन व्यवसायों को प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जाता है। अविकसीत देशों में आबादी का एक बड़ा हिस्सा कृषि में शामिल है। लघु उद्योगों के विकास के साथ, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में बहुत सारे रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं, जो प्रकृति में श्रम प्रधान हैं। तृतीयक क्षेत्र भी बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह बहुत सारे रोजगार पैदा करते हैं। कार्यशील संरचना में परिवर्तन के परिणामस्वरूप राष्ट्र के आर्थिक विकास में परिवर्तन होता है, और अधिक कामकाजी आबादी प्राथमिक क्षेत्र में तल्लीनता से द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में स्थानांतरित हो जाती है, प्रति व्यक्ति आय के साथ–साथ आर्थिक विकास की दर भी बढ़ जाती है।

2011 के अनुसार भारत में 30.23 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या

है जिसमें 1.019 प्रतिशत कृषक, 0.503 प्रतिशत कृषक मजदूर, 0.681 प्रतिशत पारिवारिक उद्योग तथा 1.236 प्रतिशत अन्य कार्यशील में हैं। जबकि 2001 में भारत की कार्यशील जनसंख्या 30.06 थी, 10 वर्षों में यह 0.17 की बढ़ोत्तरी हुई है। कार्यशील जनसंख्या में बढ़ोत्तरी होने से यह अनुमान लगा सकते हैं कि देश के आर्थिक विकास में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इसी प्रकार छत्तीसगढ़ के कार्यशील जनसंख्या का अध्ययन करने का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ में 2011 के जनसंख्या के अनुसार कुल कार्यशील जनसंख्या 27.39 प्रतिशत जिसमें 1.041 प्रतिशत कृषक, 0.753 प्रतिशत कृषक मजदूर, 1.039 प्रतिशत पारिवारिक उघोग तथा 1.424 प्रतिशत अन्य कार्यशील जनसंख्या है। जबकि 2001 में छत्तीसगढ़ की कुल कार्यशील जनसंख्या 28.62 प्रतिशत है जो कि 10 वर्षों में –1.23 प्रतिशत कम हुई है। राज्य में कार्यशील जनसंख्या में कमी होने से निर्भरता अनुपात बढ़ेगा जो कि आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

छत्तीसगढ़ राज्य के कार्यशील जनसंख्या में हुये परिवर्तन और उसका आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करने हेतु सरगुजा जिले में विगत 10 वर्षों में हुये कार्यशील जनसंख्या में परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है।

सरगुजा जिले के कार्यशील जनसंख्या में हुये परिवर्तन का विश्लेषण–कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत क्रियाशील जनसंख्या के विभिन्न व्यवसायों या कार्यों में संलग्नता का अध्ययन किया जाता है। इसके अध्ययन द्वारा क्षेत्र अथवा देश के अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान प्राप्त होता है। किसी देश या क्षेत्र के भौतिक, आर्थिक, सामाजिक घटकों में विषमता के कारण वहां की कार्यशील जनसंख्या में भी भिन्नता पाई जाती है। किसी भी क्षेत्र की आर्थिक विकास की क्रियाशील जनसंख्या जितना अधिक प्रतिबिम्ब करती है, उतना जनसंख्या के अन्य तत्व नहीं करते।

कार्यशील जनसंख्या के सापेक्ष में भारत देश में कार्यशील जनसंख्या से आशय उन व्यक्तियों की संख्या को कहा जाता है, जिनकी आयु 15 वर्ष से अधिक तथा 64 वर्ष से कम है। इस आयु के मध्य पड़ने वाली जनसंख्या को कार्यशील जनसंख्या कहते हैं। कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत कृषि, मजदूरी, पारिवारिक उद्योग, व्यापार एवं वे व्यक्ति जो अन्य जिविकोपार्जन में संलग्न हैं उन्हे सम्मिलित किया जाता है। जनसंख्या का ये पक्ष प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से आर्थिक संरचना को प्रभावित करती है। इसी परिपेक्ष्य में छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला में विगत 10 वर्षों (2001 से 2011) के मध्य कार्यशील जनसंख्या में हुये परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र–अध्ययन क्षेत्र छत्तीसगढ़ के उत्तर के स्थित सरगुजा जिला है। जिले का भौगोलिक विस्तार 23037'25'' उत्तरी अक्षांश से लेकर 2406'17'' उत्तरी अक्षांश तक तथा 81024'40'' पूर्वी देशांतर से लेकर 8404'40'' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिसका क्षेत्रफल 5732 वर्ग कि.मी. है, जिले की कुल जनसंख्या 840352 (2011) तथा घनत्व 162 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी., साक्षरता दर 60.86 प्रतिशत तथा लिंगानुपात 980 है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में विकासखण्ड को इकाई माना गया है। जिले में कुल 7 विकासखण्ड – अम्बिकापुर, लखनपुर, उदयपुर, लुड्रा, बतौली, मैनपाट, सीतापुर हैं।

अध्ययन क्षेत्र का पश्चिमी भाग पूर्वी बघेलखण्ड का पठार तथा पूर्वी भाग पाट प्रदेश के अन्तर्गत आता है। अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख खनिज कोयला तथा बाक्साइट पाये जाते हैं, अध्ययन क्षेत्र में वनों की बहुलता पाई जाती है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद सरगुजा जिले के निवासियों की कार्यशील जनसंख्या में हुये परिवर्तन का विश्लेषण करना। साथ ही अध्ययन क्षेत्र में निम्नांकित बिन्दुओं पर आंकलन व विश्लेषण किया जाना है –

LOCATION MAP OF SURGUJA DISTRICT

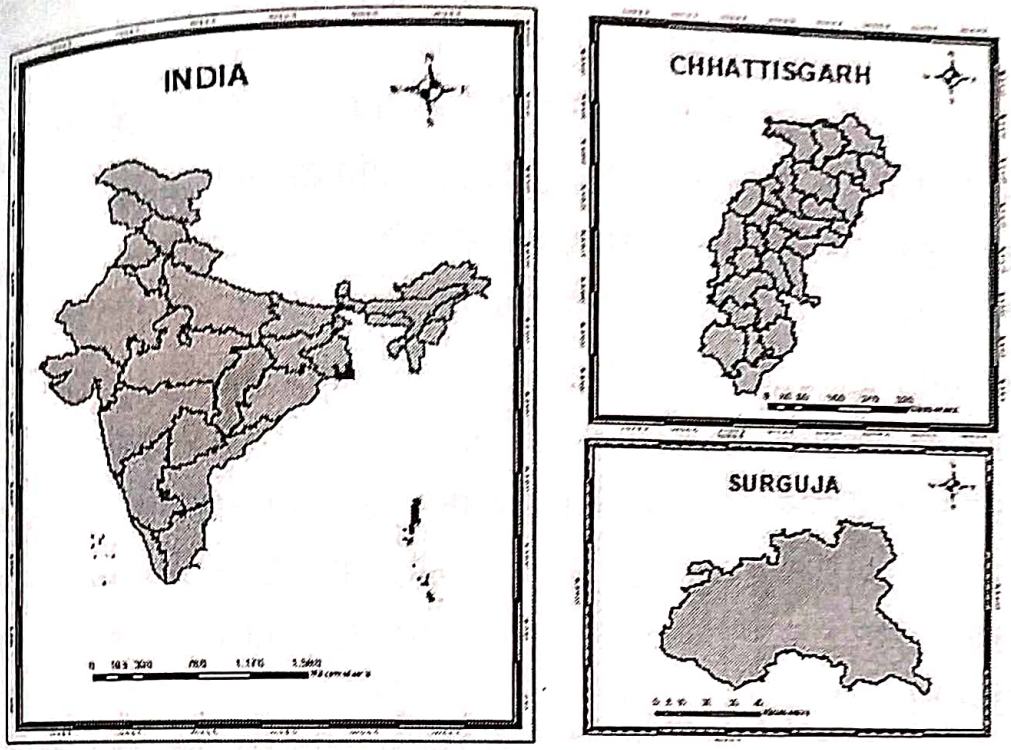

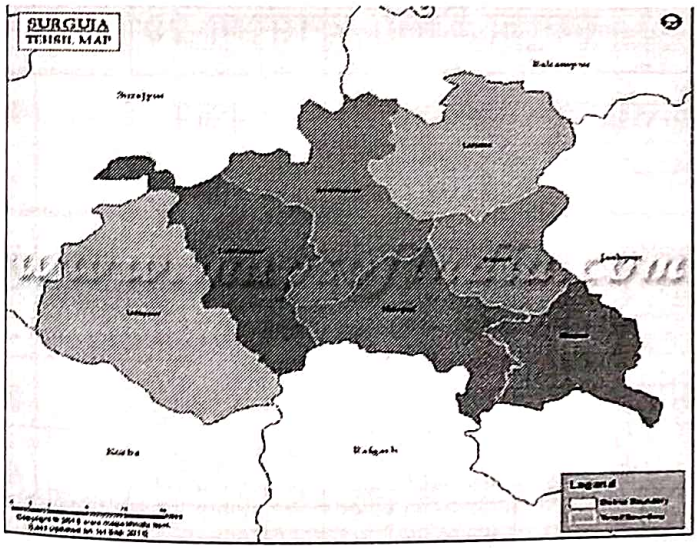

1. जिले के आर्थिक विकास के संदर्भ में कार्यशील जनसंख्या एवं उसके आर्थिक क्रियाओं के समूहों में पिछले 1 दशक में हुये परिवर्तन का विश्लेषण।
2. जिले में कृषि कार्मिकों व गैर कृषि कार्मिकों के अनुपात का विश्लेषण लैंगिक विविधता के आधार पर किया जना।

3. कार्यशील जनसंख्या में हुये परिवर्तन का आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

आंकड़ों का संकलन एवं विधि तंत्र – प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनसंख्या के मात्रात्मक व गुणात्मक आंकड़ों की आवश्यकता है, इस हेतु भारतीय जनगणना द्वारा संकलित जनांकिकीय आंकड़ों का विश्लेषण किया जाना है, जो कि द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है। कार्यिक जनसंख्या के लिए जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, भारत की जनगणना 2001 एवं 2011 के विभिन्न प्रकाशन से एकत्र किया गया है। उपरोक्त संकलित आंकड़ों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। विश्लेषित आंकड़ों की सम्प्रेषण क्षमता तथा ग्राह्यता बढ़ाने के उद्देश्य से उपयुक्त मानचित्र व आरेखों का उपयोग किया जा रहा है।

तालिका : 1

सरगुजा जिला: जनसंख्या 2011

क्र.	विकासखण्ड	जनसंख्या	पुरूष	महिला
01	अम्बिकापुर	279717	142833	136884
02	लखनपुर	118969	59782	59187
03	उदयपुर	78918	39780	39138
04	मैनपाट	76573	38703	37870
05	सीतापुर	96131	47843	48288
06	बतौली	70244	35094	35150
07	लुड्गा	119800	60457	59343
	सरगुजा	840352	424492	415860

सरगुजा जिला में कार्यशील जनसंख्या में विगत 10 वर्षों में (2001 से 2011) के मध्य कार्यशील जनसंख्या में हुये परिवर्तन कां विश्लेषण निम्नानुसार है–

तालिका : 2
सरगुजा जिला:कार्यशील जनसंख्या 2001

विकासखण्ड	कार्यशील जनसंख्या			कृषक	खेतीहर मजदूर	परिवारिक उद्योग	अन्य कार्यशील	कुल कार्यशील जनसंख्या का कुल जनसंख्या से प्रतिशत
	कुल कार्यशील	पुरूष	स्त्री					
अम्बिकापुर	73280	41422	31858	37353	25408	934	9585	51.1
लखनपुर	53646	28973	24673	29645	20262	745	2994	53.6
उदयपुर	36166	19117	17049	17186	15871	429	2680	54.6
मैनपाट	36607	19323	17284	19438	13774	593	2802	55.7
सीतापुर	113082	60534	52548	63790	38482	2026	8784	53.6
बतौली	33110	17722	15388	20569	9666	364	2211	54.9
लुड्रा	58260	30512	27748	29505	23561	1723	3471	57.5
योग	404151	217603	186548	217486	147024	6814	32527	54.0

जिले की कार्यशील जनसंख्या 2001 (प्रतिशत में)

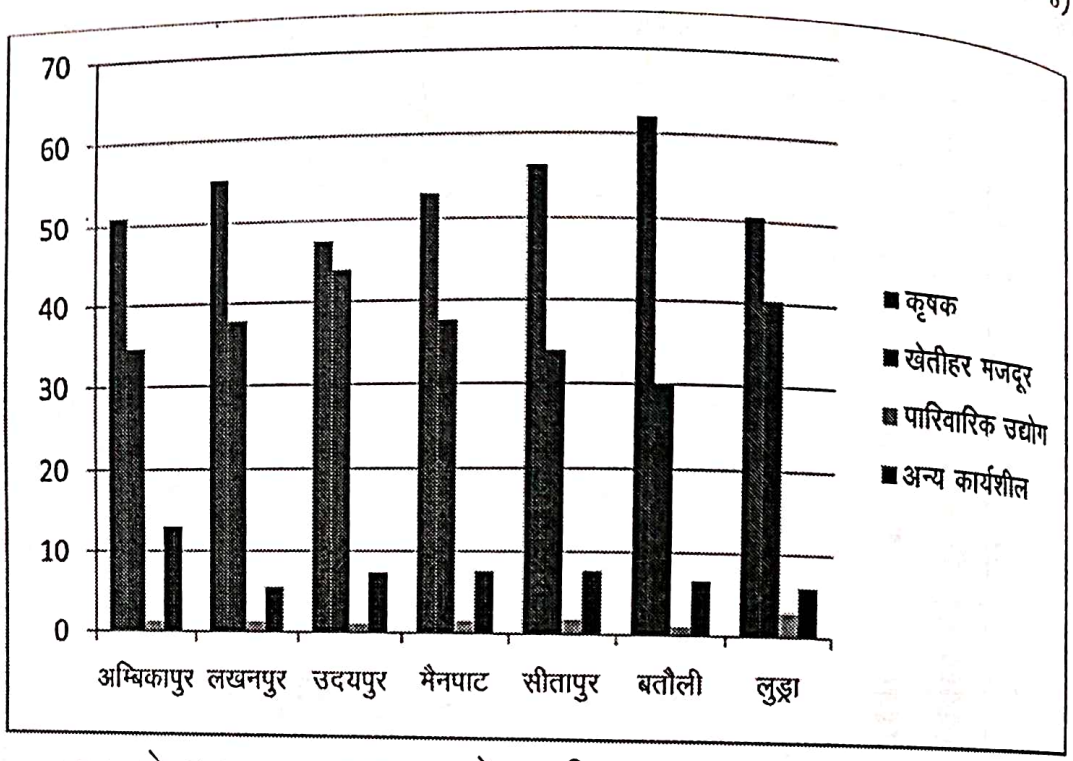

2001 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 748079 जिसमें 377178 पुरूष तथा 370901 महिला थी, कार्यशील जनसंख्या 404151 कुल जनसंख्या का 54.09 प्रतिशत थी जिसमें पुरूष 217603 (57.69) प्रतिशत तथा महिला 186548 (50.29) प्रतिशत थे।

2001 में सबसे अधिक कार्यशील जनसंख्या लुण्ड्रा विकासखण्ड में 57.5 प्रतिशत जिसमें 59.5 प्रतिशत पुरूष एवं 55.4 प्रतिशत महिला थी। जिले के कुल कार्यशील जनसंख्या में कृषक वर्ग 29.07 प्रतिशत जबकि सबसे कम पारिवारिक उद्योग में आते हैं। कुल कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत 57.6 प्रतिशत पुरूष एवं 50.2 प्रतिशत महिलायें थी। इस वर्ष कृषक वर्ग में पुरूषों की संख्या 35.15 प्रतिशत जबकि सबसे अधिक महिलाओं की संख्या पारिवारिक उद्योग में 37.2 प्रतिशत थी।

तालिका : 3

जिले की कार्यशील जनसंख्या 2011

विकासखण्ड	कार्यशील जनसंख्या			कृषक	खेतीहर मजदूर	परिवारिक उद्योग	अन्य कार्यशील	कुल कार्यशील जनसंख्या का कुल जनसंख्या से प्रतिशत
	कुल कार्यशील	पुरूष	स्त्री					
अम्बिकापुर	113824	74490	39334	29983	36590	1186	46065	40.6
लखनपुर	60128	33140	26988	32250	22821	776	4281	50.5
उदयपुर	46245	24407	21838	16066	23716	424	4039	57.3
मैनपाट	37821	20877	16944	15876	18562	225	3158	49.3
सीतापुर	51088	27292	23793	23488	22553	665	4319	53.1
बतौली	41681	21576	5175	24831	13752	264	2834	59.3
लुड्रा	64750	34649	30097	28809	30123	988	4830	54.0
योग	415534	236431	164169	163403	168177	4528	69526	49.4

जिले की कार्यशील जनसंख्या 2011 (प्रतिशत में

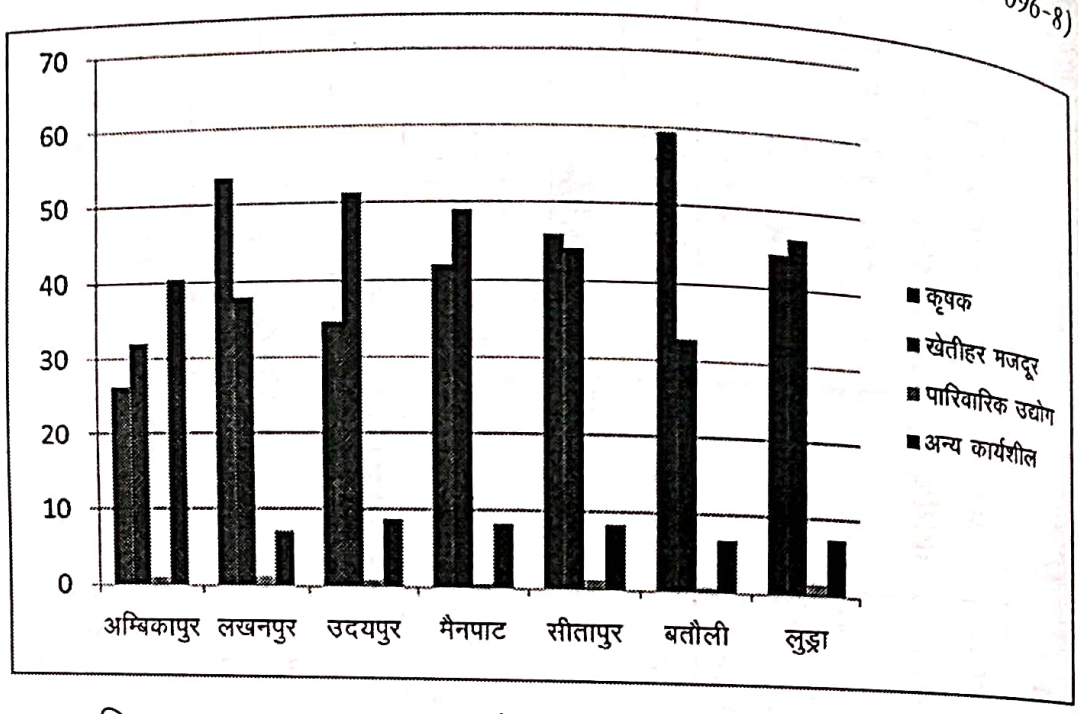

तालिका : 3, सत्र 2011 मे कार्यशील जनसंख्या को दर्शाती है, इस वर्ष में कुल जनसंख्या 840351 है जिसमें 424492 पुरूष तथा 415860 महिला है। दिये हुये जनसंख्या के अन्तर्गत कुल कार्यशील जनसंख्या 49.4 प्रतिशत जिसमें 55.6 प्रतिशत पुरूष तथा 39.4 पतिशत महिला हैं। उपर्युक्त आंकड़ों में सबसे अधिक कार्यशील जनसंख्या बतौली विकासखण्ड में हैं। कुल कार्यशील जनसंख्या में 19.4 प्रतिशत, कृषक, 20.0 प्रतिशत खेतीहर मजदूर, 0.5 पारिवांरिक उद्योग तथा 8.27 प्रतिशत अन्य कार्यशील जनसंख्या आती है।

2011 मे सबसे अधिक कार्यशील जनसंख्या बतौली विकासखण्ड में 59.34 प्रतिशत है, जिसमें 61.48 प्रतिशत पुरूष एवं 14.72 प्रतिशत महिला कार्यशील हैं। अध्ययन क्षेत्र के कुल कार्यशील जनसंख्या में 55.6 प्रतिशत पुरूष तथा 39.4 प्रतिशत महिलायें हैं, जिसमें सबसे अधिक 25.7 प्रतिशत पुरूष कृषक वर्ग में तथा सबसे अधिक महिलायें 23.3 प्रतिशत खेतीहर मजदूर में हैं।

तालिका : 4

कार्यशील जनसंख्या 2001 से 2011 में परिवर्तन

विकास–खण्ड	2001			2011			10 वर्षों में बदलाव
	कुल कार्यशील	पुरूष	स्त्री	कुल कार्यशील	पुरूष	स्त्री	
अम्बिकापुर	51.1	56.9	45.1	40.6	52.1	28.7	–10.5
लखनपुर	53.6	57.7	49.4	54.5	55.4	45.5	–3.1
उदयपुर	54.6	57.1	52.1	57.3	61.3	55.7	2.7
मैनपाट	55.7	58.0	53.3	49.3	53.9	44.7	–6.4
सीतापुर	53.6	57.2	50.0	53.1	57.0	49.2	–0.5
बतौली	54.9	58.4	51.3	59.3	61.4	14.7	4.4
लुड्रा	57.5	59.5	55.4	54.0	57.3	50.7	–3.5
योग	54.0	57.6	50.2	49.4	55.6	39.4	–4.6

तालिका 4 से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में विगत 10 वर्षों में ऋणात्मक परिवर्तन हुआ है, जिसमें जिले के बतौली विकासखण्ड में 4.4 प्रतिशत धनात्मक वृद्धि तथा उदयपुर विकासखण्ड में 2.7 प्रतिशत की वृद्धि हुआ है। अम्बिकापुर विकासखण्ड में –10.5 प्रतिशत की कमी हुआ है, जबकि अन्य में क्रमशः मैनपाट –6.4, लुण्ड्रा –3.5, लखनपुर–3.1, सीतापुर –0.5 प्रतिशत की कमी है। इस प्रकार सम्पूर्ण जिले में –4.6 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या में कमी हुआ है।

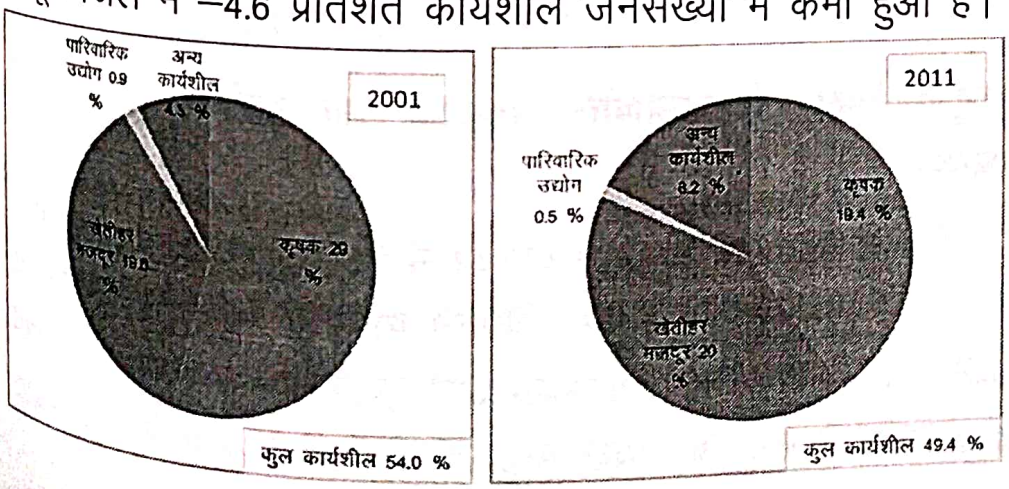

दिये हुये आरेख से स्पष्ट होता है कि कार्यशील जनसंख्या में 2001 से 2011 तक 10 वर्षों में सभी क्षेत्रों में बदलाव हुआ है। 2001 में कृषक वर्ग 29 प्रतिशत था जो 2011 में 19.4 प्रतिशत हो गया है, खेतीहर मजदूर 2001 में 19.6 प्रतिशत था, 2011 में 20 प्रतिशत हो गया है, पारिवारिक उद्योग 2001 में 0.9 प्रतिशत था, 2011 में 0.5 प्रतिशत तथा अन्य कार्यशील जनसंख्या में 2001 में 4.3 प्रतिशत था जो 2011 में 8.2 प्रतिशत हो गया है। उपर्युक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 2001 की तुलना में 2011 में कृषक तथा पारिवारिक उद्योग वर्ग में कमी हुआ है जबकि खेतीहर मजदूर तथा अन्य कार्यशील वर्ग में वृद्धि हुआ है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि सरगुजा जिले के कार्यशील जनसंख्या में ऋणात्मक बदलाव हुआ है। 2001 की तुलना में 2011 में कार्यशील जनसंख्या में कमी आई है। सबसे ज्यादा परिवर्तन कृषि क्षेत्रों में हुआ है जो कि विगत वर्षों की तुलना में कम है जबकि खेतीहर मजदूर वर्ग में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार अन्य कार्यशील में विगत वर्षो की तुलना में 2011 में वृद्धि हुआ है। सम्पूर्ण कार्यशील जनसंख्या पर दृष्टि डालें तो 2001 का कार्यशील जनसंख्या 54.0 प्रतिशत था जबकि 2011 में 49.4 प्रतिशत है जो कि विगत वर्षों की तुलना में –4.6 प्रतिशत की कमी हुई है। इससे यह कहा जा सकता है कि कार्यशील जनसंख्या में कमी होने से आश्रित जनसंख्या में वृद्धि हुआ जिससे राज्य एवं देश के विकास में नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

सरगुजा जिले की कार्यशील जनसंख्या का आर्थिक विकास पर प्रभाव

आर्थिक विकास एक अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों का निर्माण करता है, इन सभी विभिन्न व्यवसायों को तीन श्रेणीयों में बांटा गया है, प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक। प्राथमिक व्यवसायों के अन्तर्गत वे सभी आवश्यक गतिविधियां हैं जैसे – कृषि और संबद्ध

गतिविधियां जैसे पशुपालन, वानिकी, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन आदि।

सरगुजा जिले के कार्यशील जनसंख्या के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिले में 2001 से 2011 तक 10 वर्षों में कार्यशील जनसंख्या में –4.6 प्रतिशत की कमी हुई है, अर्थात् आश्रित जनसंख्या में वृद्वि हुई है, जिसका मुख्य कारण रोजगार हेतु अन्य क्षेत्रों में प्रवास कर गये हैं। निर्भरता अनुपात बढ़ने से इनके भरण पोषण एवं स्वास्थ्य सुविधा हेतु आय का अधिकांश भाग व्यय करना पड़ता है जिससे आर्थिक एवं सामाजिक विकास कम होगा।

आर्थिक विकास हेतु शासन द्वारा चलाये गये कुछ महत्वपूर्ण योजनायें

आर्थिक विकास हेतु केन्द्र व राज्य शासन द्वारा विभिन्न योजनायें चलायी जाती हैं जिससे जनसंख्या का प्रवास कम हो तथा आत्मनिर्भर बन कर अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास कर सके।

- **कृषि एवं पशुपालन** – कृषि विकास में धान के उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग, दलहन, तिलहन तथा व्यवसायिक फसल आदि के उत्पादन में वृद्वि हेतु प्रोत्साहन। उद्यानिकी में शब्जी, फल में सही मूल्य प्रदान करना। पशुपालन में आत्मनिर्भर बनाने हेतु गाय बैल का वितरण।

- **वन, वन्यजीव पर आधारित उद्योग** – वन आधारित उद्योगों का विकास करना जिसमें बांस के बर्तन, लकड़ी मील, छत्तीसगढ़ लघु वनोपज संघ द्वारा राष्ट्रीयकृत लघु वनोपज क्रमशः तेन्दू पत्ता, साल बीज, हर्रा, गोंद के अतिरिक्त अन्य राष्ट्रीयकृत लघु वनोपज जैसे लाख, शहद, इमली वनौषधि इत्यादि का संग्रहण, प्रसंस्करण एवं विपणन का कार्य किया जा रहा है।

- **शिक्षा का विकास** – स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा, तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा, औद्योगिक प्रशिक्षण शालायें, कृषि

शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा तथा लाईवलीहुड कालेज का विकास किया जा रहा है।

- **सरकार की अन्य योजनायें** – महात्मागांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना, प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, कृषक जीवन ज्योती योजना, गोधन न्याय योजना, सुराजी गांव योजना, छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री मितान योजना, आजीविका अंगना योजना, पौन पसारी योजना आदि अन्य महत्वपूर्ण योजनायें हैं जो कि स्थानीय स्तर पर रोजगार का विकास करने तथा प्रवास को रोकने हेतु प्रयास कर रहा है।

शोध ग्रंथ

मध्यप्रदेश में क्रियाशील जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना तथा कृषि विकास संबंध – शोध पत्र भूगोल पत्रिका (1983)

बघेल, अनुसूइया एवं बृजलाल पटेल (2014–15) : "छत्तीसगढ़ में व्यवसायिक संरचना" पियर रिव्यूड जर्नल्स रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, अंक 19–21

राव, बी.पी. एवं देवेन्द्र नाथ सिंह (1986) : सरयूपार मैदान (उत्तरप्रदेश) में जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना की," उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, गोरखपुर अंक 22

साहा, ममता (1999) : छत्तीसगढ़ में जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन 1961–91", अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर

दुबे, घनश्याम एवं अग्रवाल अभिषेक (2019) : "छत्तीसगढ़ में लघुवनोपज संग्रहण एवं संरगुजा जिले के वनोपज संग्राहक श्रमिकों का ऐतिहासिक विश्लेषण" अंतर्रराष्ट्रीय शोध पत्रिका, अंक 9

Kumara, Sumita (2021) : *"Working Women in Informal Sector: A Geographical Study of Domestic Workers of Varanasi City"* Unpblished PHD Thesis. Banaras Hindu University.

Yadav, Dr Sandeep and Sonu Sahu (2011) : *"Spatial Pattern of Population*

Dynamics of Ajmer District" International journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology. Volume 11.

Pratap Vishnu and Pratap Maheshwar (2017) : "Variations in the Occupational Structure and Gender Segregation in India and the States: Analysis Based on Census of India 2001 and 2011. International Journal of Economics & Management Sciences.

छत्तीसगढ़ विकास पत्रिका

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 4 उपधारा (1) के खण्ड (ख) के अनुसार मेनुअल, राज्य योजना आयोग, छत्तीसगढ़।